संगम युग के श्रेष्ठ भाग्य की स्मृति - बीके सुरजभाई -१६.०५.२०१३

ओम शांति,

बाबा हम सभी का श्रेष्ठ भाग्य बनाने आया है । सभी बाबा से मिले हुए श्रेष्ठ भाग्य से संतुस्ट है? है? बच्चे संतुस्ट है? समज में आती है यह बात? देखो आगे । यह सबसे छोटा स्टूडेंट केहता है हाँ बिलकुल संतुस्ट है । तो बाबा हमे क्या-क्या भाग्य देता है? कुछ वर्तमान के भाग्य है कुछ भविष्य के और उनको प्राप्त करने की विधि क्या है इस पर आज चर्चा करेंगे । बाबा हमे क्या-क्या भाग्य देता है वर्तमान में? बाबा से हमे क्या-क्या मिलता है? सब जानते है? कोई गंभीर प्रश्न नहीं है? बोलो?

एक - **ख़ुशी** मिलती है । क्यूंकि खुश रहना भी बहोत बड़ा भाग्य है । है या नहीं? खुश रहना आज कल मुश्किल होता जा रहा है । जब तक छोटे बच्चे है तो खुश है । आज कल तो छोटे बच्चे भी खुश नहीं रहते पढाई का बोज, साथियों का व्यवहार, शुरु से है गड़बड़ शुरु हो जाती है । ख़ुशी एक भाग्य के रूप में मिली ।

दुसरा? बोलो? सुरेश भाई आप मुस्कुरा रहे है क्या मिला? **ज्ञान** भी बहोत बड़ा भाग्य है । नो डाउट । रास्ता मिल गया ना सत्य की तलाश में हम सभी विशेष बहोत भटकते थे । क्यूँ की हमने पूर्व कल्प में सत्य को पाया था तो द्वापर युग से ही सत्य की खोज और शिवबाबा के लिए आकर्षण हमारे मन में पैदा हो गया था । दोनों की तलाश थी इसलिए शुरु से ही शिव की भक्ति बहोत रही है । तो सत्य ज्ञान भी बहोत बड़ी चीज हमे मिल गयी । रतन है येह, अविनासी रतन है येह । इनसे भविष्य में क्या मिल जाता है? ज्ञान धन से क्या मिल जाता है? अब तो समज में आ गयी? क्या? बोलो माताएं उमंग से क्या? अरे वरसा नहीं । ज्ञान खजाना मिल गया इससे सतयुग में क्या मिल गया? माताओ को पता नहीं भाई? भाई बाताओ -स्थूल खजाना । माताओ को नहीं पता? **जिसके पास ज्ञान धन जितना होगा, स्थूल धन उतना ही ज्यादा मिलेगा । उसमें भी जो ज्ञान धन दान करेंगे, उनके पास अविनाशी धन बहोत आएगा ।**

और आगे चलो क्या भाग्य मिला संगम पे? आप बोल नहीं रहे अभी, नशा चढ़ा नहीं है, चढ़ाउ जरा? **भाग्य विधाता ही अपना हो गया** सबसे बड़ा भाग्य स्वयं भगवान् ही हमारे घर में मेहमान बन कर आ गया । दादी कहा करती थी - **वोह सब बहोत भाग्यवान होते है जिनके घर में मेहमान आते है ।** मेहमान आते थे ना मधुबन में? तब मधुबन छोटा भी था तो दादी हमेंशा कहती थी बहोत भाग्यवान है क्यूँ की हमारे घर में मेहमान आते है । **और जिनके घर में स्वयम भगवान् मेहमान बन कर आ गया हो? उनके भाग्य? स्वर्ण अक्षरों में लिखे जायेंगे ।**

और भाग्य आगे चलो बाबा ने आकर हमे एक और चीज दी है जिसकी फिलिंग ब्राह्मणों को काफी कम है और हमे उस फिलिंग को बढ़ाना है और वोह है - बाबा से हर एक को **वरदान** भी मिले है । पता है माताओ को? माताओ को नहीं मिले हें ना? बाबा ने दिये ही नहीं भाइयो को दे दिये शायद । माताओ को कलस दे दिया, भाइयो को वरदान दे दिया । थिक है? ऐसा ही हुआ है या मिले है वरदान? तो वरदान सब को बहोत मिले है बड़ी गुह्य बात है यह । सद्गुरु के रूप में बाबा ने हमे वरदान दिये है उन वरदानो को यूज़ करके विश्व की सेवा करना यह अपने हाथ में है । वरदान बाबा देता है ।

एक वरदान की चर्चा करूँ - **तुम विघ्न विनाशक हो** वरदान दिया या नहीं? पर **लाखो ब्राह्मणों में से थोड़ो को पता है हम विघ्न विनाशक है ।** उनके पास विघ्न आते है वोह परेशान हो जाते है बाबा इन विघ्नों को हटाओ बाबा कहता है तुम हटाओ, विघ्न विनाशक तुम हो, अपने वरदानो को जानना उसे स्वीकार करना उसे सेवाओं में लगा देना यह सब से बड़ा काम है ।

और भी वरदान बाबा से हमे मिले है वरदानो को किसकी बुद्धि धारण कर सकती है? यह भी याद रखना है - **जो लम्बा काल ईश्वरीय नशे में रहते है उस बुद्धि में वरदान को धारण करने की शक्ति आ जाती है ।** वरदान बहोत बड़ी चीज है । **किसीको यह भी वरदान मिला है तुम इस्ट-देवी हो इस्ट-देव हो तुम अपने मुख से जो बोलोगे वोह दुसरो के लिए वरदान हो जायेगा ।** यह भी वरदान मिला है । लेकिन यह कितनो को पता है इसपे निर्भर करता है किसने इसको स्वीकार किया है के येह मुझे वरदान है इसपे निर्भर करेगा ।

एक और सबसे बड़ा वरदान होता है जो कुछ आत्माओ को प्राप्त है वोह वरदान है - **तुम जो संकल्प करोंगे वही सिद्ध होगा । येह सब से बड़ा वरदान होता है ।** वाचा के वरदान मिलते सब को है पर फलीभूत उनका होता है जो वाचा को कम यूज़ करते है । जो वाचा की शक्तिओ को बहोत यूज़ करते है, वेस्ट करते है उनका येह वरदान समाप्त हो जाता है । बोल में भी वरदान है माताओ की सिकायत होती है बच्चे हमारी सुनते नहीं बच्चे क्या कहते है? सुनते है या नहीं? नहीं सुनते । येह आगे वाली नहीं सुनती । क्यों नहीं सुनते? क्यूंकि वाचा को वेस्ट बहोत करते है । अब संकल्पों का वरदान किसको मिलेगा? अब तो आ गया उतर? जो व्यर्थ से मुक्त है ।

में एक मुरली पढ़ रहा था थोड़ी सी मिनट हुयी और कोई आ गया मुझसे मिलने, उसमें था **समय और संकल्प का बहोत महत्व है** । बाबा सुनाते आ रहे है **व्यर्थ से जो मुक्त हो जायेंगे वोह संकल्पों का चमत्कार देखेंगे ।** मुझे बहोत प्रिय लगी । जो आत्माएं वर्थ संकल्पों से मुक्त हो जायेंगी वोह संकल्पों की शक्ति का चमत्कार देखेंगी । बहोत बड़ी चीज हो गयी तो बाबा से हमे येह सब भाग्य मिले है ।

आने वाला समय, आने वाले समय में सेवा किसके द्वारा होगी इस पर जरा हम गोर किया करें । सेवा बोल से होती है । बहोत सब बाबा के बच्चे करते है यहाँ बहोत बड़े बड़े प्रोग्राम होते है चाहे फिर वोह भाषण के द्वारा हो, चाहे प्रदर्शनी मेलो के द्वारा हो आज कल और भी कई लोगो ने अच्छी-अच्छी बातें करदी है ।

आपको पता हो शहर का नाम मुझे नहीं याद आ रहा महारास्ट्र में एक भाई इंजिनियर है - दो अच्छी बसे खरीद ली उनमें बाबा के चित्र लगा दिए सारे और प्रबंध कर दिया बैठने, सोने का जो उसमें चलेंगे उनके लियें और दे दिया की इसे यूज़ करो सारे भारत में । किसीने ट्रेन बना दी, माताओं ने देखी है ट्रेन? उसमें प्रदर्शनी के चित्र सजा दिए देखने में लगती है ट्रेन छोटी सी और जिस गाँव में जायेंगी गाँव वाले उमड़ पड़ेंगे की ट्रेन आई है तो यह सब भी बाबा की सेवाओं के बहोत अच्छे साधन है । जो कर रहे है वोह भी भाग्यवान है मैंने पूछा की जिस भाई ने यह दो बसे दी बिलकुल वोह कुछ नहीं रखता उसमें अपना संबंध । दे दिया अब इसको घुमाओ सारे भारत में कहीं भी । जो भी मांगे वहां ले जाओ इसको और सेवा करो ।

कई लोग क्या करते है? **सेवा में कोई साधन देकर मेरा अधिकार है मेरे बिना पूछे यह हिले भी**

नहीं तो वोह खड़ी ही रहती है । वोह भी खड़े हो जातें है और गाडी भी खड़ी हो जाती है सेवा होती ही नहीं । **जो निष्काम भाव से सेवा करतें है, जो में पन से मुक्त हो कर सेवा करतें है, जो कुछ भी करके अपना अधिकार छोड़ देते है वोह महान है ।** और जिन्होंने पकड़ के रखा है यह मेरी है उनका भाग्य वही से घटना प्रारंभ हो जाता है । दुसरो को सुख मिलता रहेंगा वोह में पन के कारण दुखी होते रहेंगे देखा मेरे को पूछा नहीं । सब सुख पा रहे है वोह दुखी हो रहे है । यह भाग्य को कम करने वाली चीजें है ।

आने वाले समय में क्या होगा? कोंन सेवा कर सकेंगे? बोलो भाई बताएँगे इसका उतर । आने वाला समय हमसे कुछ मांग करेंगा, कर रहा है समय विकराल रूप लेता जा रहा है, दुनिया बहार से सुंदर नजर आ रही है और अंदर से? बिलकुल खोकली, रोग बढ़ते जा रहे है । मानसिक रोग बढ़ रहे है, समस्याएँ बढ़ रही है, लोगो को नींद नहीं आ रही है, तंत्र मंत्र भूत प्रेतों को प्रभाव बढ़ रहा है तो इस तरह से संसार समस्याओं में घिरता जा रहा है । और यह हो रहा है पाप कर्मो के कारन और यह हो रहा है विकारों की अति के कारन अब अंत होगा इन सबका । तो हमे कोनसी सेवा करनी पड़ेगी? दृष्टी के द्वारा, साक्षात्कार के द्वारा, शुभ वायब्रेशन्स के द्वारा, था न मुरली में वरदान श्रेष्ठ वायब्रेशन्स के द्वारा ।

मुझे एक बात बहोत प्रिय लगी है आप में से भी जो करना चाहे करें - **ग्लोब के उपर खड़े होकर सारे संसार को दृष्टी दो** । करना । जो बहोत अच्छे पुरुषार्थी है - में पूर्वज हूँ इस गुप्त फिलिंग में आकर एक जगह खड़े हो कर, **जैसे हम ग्लोब के उपर खड़े है सारे संसार को दृष्टी दे दो हमारी दृष्टी से क्या जाएगा? वही जो हमारे अंदर होगा, जो हमारी वृत्ति में होगा, जो हमारी फीलिंग्स में होगा वोह हमारी दृष्टी से सारे संसार में जाएगा ।** संकल्प कर लो सभी आत्माएं सुखी हो जाएँ, सभी आत्माएं विघ्नों से मुक्त हो जाएँ, सभी आत्माएं व्यसनों से मुक्त हो जाएँ, यह सेवा सब को बहोत करनी है । केवल अपने में ही उलज कर नहीं रह जाना है । ध्यान देंगे सभी - अपने में उलज गयें, अपने परिवार में उलज गयें, अपने बच्चो में उलज कर रह गयें तो आगे आने वाले समय में कुछ भी नहीं कर पायेंगे और यह उल्जन बढती जायेंगी ।

मुझे आज एक फ़ोन आया मुझे उसकी फीलिंग्स हो रही है की देखो व्यसन मनुष्य को क्या करते है - एक व्यक्ति आयु केवल सेतींस साल, सराबी, दो बार यहाँ भी आया प्रोग्राम्स में प्रतिज्ञा की सराब नहीं पीऊँगा । उसके युगल ज्ञान में है, बहोत समजदार है, मेरे को आज फ़ोन किया की कुछ दिन पहले ही मेरे पति की मृत्यु हो गयी । मैंने पूछा क्या हुआ? बहोत सराब पीते थे चाहते थे की छोड़ दू लेकिन व्यसन के इतने आदि हो गए थे की छोड़ ही नहीं पाएं । मैंने पूछा क्या हुआ? तो कहे उनका लीवर ख़राब हो गया । तो देखो कितनी बड़ी समस्या हो जाती है पुरे परिवार के लिए । उनके बच्चे अभी छोटे है । यह माता भी अभी पैतीस साल की है । कहाँ उनके जगह मुझे नौकरी दे दी गयी । अब नौकरी भी करें, बच्चो को भी संभालें, खाना-पीना भी करें उनका । कितना कठिन हो जाता है उनका काम ।

एक व्यसन परिवार को बर्बाद करने वाला है ना? यह बढ़ता जा रहा है । इसलिए हमे दृष्टी से, वायब्रेशन्स से और **सबसे बड़ी सेवा होंगी साक्षात्कार से ।** इसकी और चलना है । सभी जो भी संसार को कुछ देना चाहतें है, बहोत बाबा के समजदार बच्चे बैठें है । जो भी संसार को कुछ देना चाहतें है

उन्हें इस समय अपने को चारो और से समेट कर, व्यर्थ से मुक्त हो कर श्रेष्ठ कमाई में लग जाना चाहियें । बाकी कुछ काम नहीं आने वाला है । ना मान-शान, ना धन-संपदा, बुरा तो लगे पर कहदुं माताओं को - ना बच्चे । कोई किसी के काम नहीं आयेंगा । इसलिए बच्चो के लियें भी आत्मिक भाव धारण कर लो । वोह आत्माएं है इनका भी अपना पार्ट है, यह हमारे घर में आयें है अब हमारे बच्चे है, हो सकता है कोई पिछले जनम में हम उनके बच्चे रहे हो, रहे होंगे या नहीं? इनके अपने पुन्य और पापो की अलग कहानी है । इनका भगवान् से कितना प्यार है? इन्होने कैसी जनम जनम भक्ति की है? उसकी अलग कहानी है ना? माँ बाप ही तो बच्चो के पुरे जिम्मेदार नहीं हों सकते । हल्का करो अपने को और अटेन्सन दो अपनी श्रेष्ठ स्थिति पर । कई लोग सोचते है यह कैसी बात सीखा रहे है बच्चो पर ध्यान ना दो हम यह नहीं सीखा रहे की बच्चो पर ध्यान ना दो । बच्चो पे पूरा ध्यान दो लेकिन उलझो नहीं । यह ध्यान रखना माताओ को माताओ को कम समज में आती है यह बात इसलिए में बार बार सिखाता हूँ सभी माताओ को - **जितनी अपनी स्थिति श्रेष्ठ होंगी बच्चे चरित्रवान होंगें ।** बिलकुल स्पस्ट जान ले माताएं - **जितनी माताओ में प्यूरिटी अच्छी होंगी बच्चे चरित्रवान होंगें । माताएं जितना अच्छे वायब्रेशन्स में भोजन बनायेंगी बच्चे चरित्रवान होंगें ।**

और बातों को छोड़ कर श्रेष्ठ पुरुषार्थ पर अब हमें अटेंशन देना है क्यूंकि समय हमसे बहोत कुछ डिमांड करेंगा । इसलियें जो अच्छे पुरुषार्थी है उन्हें ध्यान देना है किसी भी चीज के पीछे अब दौड़ नें की जरुरत नहीं है । ऐसे नहीं की सन्मान के पीछे हमारा टाइम जा रहा हों, अपनी पहचान बनाने के लियें हमारा टाइम जा रहा हों, लोग हमे जान ले हम टीवी पर आजायें, हम अखबारों में आजायें इसमें हमारा टाइम जा रहा हों । अखबारों में तो पापियों के फोटो भी छपतें है, छपतें है या नहीं? सारा संसार उन्हें जान लेता है यह है वही महापुरुष, जानतें है या नहीं? इससे कुछ मिलने वाला नहीं है । **हम बाबा से वरदान लें, शक्तियां ले ले ताकि हम खुलें हाथ बाँट सकें । बाबा हमें श्रेष्ठ भाग्य देने आया है ।**

बाबा की बहोत अच्छी बात साकार में जब बाबा थे तब रात्रि क्लासेज ब्रहमा बाबा का अनुभव जैसा होती थी । शिवबाबा तो सवेरें आते थे रात को भी आ जातें होंगे कभीं-कभीं वोह तो किसी को नहीं पता चलेंगा । लेकिन बाबा अपने अनुभव जैसे सुनाते थे - बच्चे बाबा को नशा चड़ा हुआ है **भाग्यविधाता हमारे हाथ में आ गया है ।** हमें भी नशा चड जाएँ तो हमारा भाग्य भी बहोत श्रेष्ठ हो जायेंगा । फिर बाबा कहा करते थे - **जिसका बाप ही भाग्यविधाता हों उसको भला भाग्य की कहाँ कमी रहेंगी ।** तो हम सभी इस चीज पे ध्यान दे ।

एक चीज मुझे और याद आ गयी इसको सभी को बहोत गहराई से जानना है । मुरली थी साकार, लौकिक में भी कोई राजा का बच्चा राजकुमार हो उसे अपने बाप की राजाई का नशा रहता है यह मेरी है, साहूकार का बच्चा हो उसे भी नशा रहता है यह धन-सम्पति मेरी है । हमें भी नशा रहे बाबा की सारी सम्पति मेरी है । तो पहले बाबा की एक सम्पति का नशा हो जाएँ, बोलो कौनसी? **शक्तियां । बाबा सर्व शक्तिवान है, उसकी शक्तियों पर हमारा अधिकार है ।** हमें नशा हो जाएँ । मुझे याद आ गया अभी हम दिऊ(DIU) गयें थे । तो दिऊ से आ रहे थे रात को क्रॉस करना होता है गिरिनार का जंगल, जूनागढ़ में गिरिनार बहोत बड़ा फ़ोरेस्ट एरिया है ना? तो हम चल रहे थे तो हमे कहा की भाई अगर तुम्हारा भाग्य हुआ तो शेर दिख जाएगा । शेर बहोत कम रह गए है ना? क्यूँकी वहां बारिस नहीं हो रही है, सालो साल वहां अकाल पड़ रहा है । एक गेट से पास हुए फिर वोह गेट बंध

कर लेते है और आने नहीं देते सामको सात बजे के बाद । दूसरा गेट भी पास हो गया हमने सोचा शेर तो दिखा नहीं हमारा भाग्य शायद कम है आज । तो जैसे ही हम गेट क्रॉस हो गए आगे चले जंगल आगे भी है । चार शेर सड़क पर खड़े है । मैंने सोचा जंगल तो पूरा हो गया यह गॉव आ गया होगा यह गॉव की गाय खड़ी है । लेकिन देखा वोह तो चार शेर है । उनमें से तिन जो थे हमे थोडा अंदाज हुआ एक माँ और दो बच्चे थे वोह थोडा उपर हट गए, उपर माना बहोत उपर नहीं । ऐसे बड़े थे सब, लेकिन जो शेर था वोह बाप होंगा उनका । बिलकुल वहीँ खड़ा है बिलकुल मस्ती से, नो इफ़ेक्ट । मैंने सोचा देखो शेर तो शेर है ना? वोह माँ बच्चो को लेकर उपर चली गयी । उसको खतरा होता है ना? पता नहीं कोंन आ गया, लाइट जलती है गाड़ी की लेकिन अभी भी शेर वहीँ खड़ा है सुरक्षा में खड़ा है । जैसे किसी ने कुछ किया तो में हूँ यहाँ । तो में सोच रहा था शेर के बच्चे शेर और सर्वशक्तिवान के बच्चे? कमजोर? क्या होंगे? मास्टर सर्वशक्तिवान ।

तो बाबा का जो शक्तियों का वरसा है इसे हम स्वीकार करें । पहचाने की उसका शक्तियों का वरसा हमें मिल गया है । मिला है? सच? क्यूंकि यह ऐसी सूक्ष्म चीज है स्थूल चीज का तो नशा मनुष्यों को फट से चढ़ जाता है ना? किसी के बाप के पास दस करोड़ है, वोह मेरे है । लेकिन यह सूक्ष्म चीज है की रोज रोज हमें इसको अपने चिंतन में लाना है - बाबा की सर्व शक्तियों पर मेरा अधिकार है । और बाबा कहाँ करते है इन शक्तियों को आर्डर दो । सूक्ष्म गति है, समझने की कोशिश करनी पड़ेगी थोड़ी । बाबा नें कितना सुंदर महावाक्य उच्चारण किया - **जब भगवान् तुम्हारें बुलावे पर आ जाता है, तो क्या शक्तियां नहीं आयेंगी?** एकदम नशा चड़ने वाली बात है । **मास्टर सर्व शक्तिवान की स्मृति में हम आयें, तो समज ले शक्तियां हमारे पास आ गयी ।** जैसे की कोई स्थूल चीज हमारे पास हो उसको हम आर्डर दे दे की जाओ हमारा यह काम करों, ऐसे ही शक्तियों को भी आर्डर दे दे की जाओ इस समस्या को नस्ट करके आओ, करें यह सभी । मास्टर सर्व शक्तिवान की इस गुड फिलिंग में की सारी शक्तियां हमारें आस पास आ गयीं है । इसे आप स्थूल में देखें - आठ शक्तियां साकार रूप में, देह धारियों के रूप में, देव रूप में हमारे सामने आ गयीं तो हम इन्हें आर्डर दे दे की जाओ इस समस्या को समाप्त करो । वोह व्यक्ति वोह आत्मा बहोत दुखी है, जाओ उसके दुःख हरो । वोह आत्मा बहोत पीड़ित है, जाओ उसकी पीड़ा हरो । वोह आत्मा माया से हार रहीं है, निर्बल है, जाओ उसको बल दे कर मायाजित बनाओ । थिक है? पसंद है? करके देखना । धीरे धीरे अनुभव होने लगेंगे की शक्तियां हमारे आदेश का पालन करती है और काम होता है । किसी दुखी व्यक्ति का दुःख समाप्त होता है, किसी माया से हार कर निराश होने वाले व्यक्ति में माया से जितने का बल आ जाता है । यह प्रैक्टिस हम सभीं करेंगे तो बहोत अच्छा भाग्य हम सब को मिल रहा है ।

इस समय के महत्व को सभी बार बार याद करें । एक एक सेकंड अनमोल है, एक एक वर्स के समान है । मैंने पहले भी सुनाया की एक सेकंड के दसवें हिस्से का कितना महत्व है वोह उससे पूछो जो दौड़ लगते है ना एथलेटिक्स । चारसो मीटर की कभी कभी एक किलोमीटर की फिर उससे भी ज्यादा सो मीटर की आप को तो पता है ना दौड़ने वाले दौड़ लगा ते है । कितने अंतर में सेकंड नंबर रह जाता है? एक सेकंड के सौवे हिस्से का । एक व्यक्ति का एक कदम आगे रह गया दुसरे का एक कदम पीछे रह गया तो एक का गोल्ड मैडल दुसरे का सिल्वर मैडल मिल गया । उसको पता है ना देखो मामूली के समय का रिजल्ट में कितना बड़ा अंतर हो गया । तो हमारें लिए भी यह समय बहोत

इम्पोर्टेन्ट है, हम इसके महेत्व को याद करें ।

एक बात में आपको सुना दू मेरे भी मन में बहोत साल तक यह बात गूंजती रही एक दो दिन से मुझे फिर याद रही थी की यह घड़ियाँ याद आया करेंगी । संगम युग के यह सुंदर दिन याद आया करेंगे । अब वोह लोग इस समय को याद करते है जो बाबा से पर्सनल मिलते थे । इसी यात्रा में मुझे दो तिन लोग मिले जिन्होंने मुझे बड़े नशे से कहाँ हमनें तो बाबा के हाथ से टोली खायीं हुयीं है, हमें तो बाबा ने मिलके यह वरदान दिया था लिख के रखा है । अब सोचते है हम की वोह समय तो अब पूरा हो गया बाबा के हाथ से टोली लेना, बाबा की लम्बी मुरली चलना, बहोत गुह्य मुरली चलना वोह भी पूरा हो गया तो पीछे वाले दिन भी याद आतें है । पर पुरुषार्थ की दृष्टी से वोह दिन याद आया करेंगे की इतना सुंदर समय हमारें पास था हमने उसे कैसें कैसे पूरा कर दिया । खेल कूद में पूरा कर दिया । जैसे स्टूडेंट्स को, मनुष्यों को याद आता है ना? एक व्यक्ति पढ़-लिख के कलेक्टर बन गया है, दूसरा व्यक्ति चपरासी । दोनों ने बी.ऐ ही किया है । एक ने आई.ए.ऐस कर लिया दूसरा कोई एक्साम पास नहीं कर पाया चपरासी बन कर रह गया । समय को महत्व नहीं दिया ना? जब पढने का समय था तब गवांया इधर-उधर बुरे संग में । जिन्होंने बुरे संग में नहीं गवांया वोह अच्छी-अच्छी पोस्ट पे पहोंच जातें है । बहोत स्टूडेंट आज कल हो रहा है बहोत अच्छे कोम्पितिसं (competition) देते है ।

आज एक का समाचार - एक माताजी ने फ़ोन किया मेरा बच्चा इंजीनियरिंग कर लिया है नौकरी नहीं मिली दो साल से गहरे डिप्रेसन में चला गया है । मैंने उससे कहा मेरे से बात तो करा दो । उस ने कहा लो सूरज भाई का फ़ोन है बात तो कर लो वोह ना कह रहा था में सुन रहा था फ़ोन पे । मैंने कहा देखो भाग्य - की आत्मा डिप्रेसन से निकल भी नहीं सकती, उसको इच्छा भी नहीं है की में डिप्रेसन से निकलू । फिर मुझे बताया की दसवीं क्लास से इसको डिप्रेसन हो गया था । बारवीं में बहोत कम नंबर आ गयें डोनेशन देकर इंजीनियरिंग में भेजा पैसा दे के भेज दिया जैसे तैसे पास भी हो गया, लेकिन नंबर तो बहोत कम रहे होंगे ना । तो यह समस्याएं ।

जो मनुष्य अपने उचित समय को प्रॉपर महत्व देकर उसका फायदा उठाते है वोह जीवन भर सुखी रहते है । हम इस समय को महत्व देकर अगर श्रेष्ठ पुरुषार्थ करेंगे तो तिन युगों तक सुखी रहेंगे, है ना? एकाद साल नहीं, एक जीवन नहीं, तिन युगों तक सुखी रहेंगे । तो सभी बाबा के इस मिले हुए भाग्य को पहचाने, इसे पूरा महत्व दे, यह सुंदर समय हलकी हलकी बातों में ना बिता दे, बहोत बड़ा भाग्य मिला है । बाबा कहा करतें है - **बच्चे विचार करों भगवान् तुम्हारे लिए हथेली पर स्वर्ग लाया है, कितनी बड़ी चीज हमें मिलने जा रही है ।** हमें सतयुग में जो वारसा है, जो प्रॉपर्टी है वोह कितनी बड़ी है इसका आभास अभी नहीं है, किसी भी ब्राह्मण को नहीं है ।

क्या होंगा वहाँ? अभी अभी मुरली में आया था - तुम्हारें शरीर कंचन के तरह चमकते रहेंगे, किसी को यह कल्पना नहीं है । सोचो ऐसा शरीर जिसमें कोई रोग ही ना हो, ऐसा शरीर जिसकी लम्बी आयु हो, देड्सो साल भी आनंद ले । आज किसी की आयु ८० साल की हो जाती है परेशान हों जातें है, मृत्यु का इन्तजार करते रहते है । येह बीमारी वोह बीमारी दवाई खा खा कर बोर हो जातें है । देड्सो साल तक जीवन को एन्जॉय करेंगे, बोर नहीं होंगे येह फिलिंग नहीं होंगी हम बूढ़े हो गयें, कोई मदद करें, बच्चे खाना तो पहोंचाये कमरे में, येह सब नहीं होंगा । ऐसा सुंदर वरसा बहोत बड़ी चीज, जहाँ हवाओ में भी सुगंध होंगी, जहाँ चारो और प्रकृति का इतना सौंदर्य होगा की घर से बहार निकलते ही

आनंद ही आनंद अनुभव होगा । ऐसा सुंदर माहोल जब चाहे पुष्पक विमान में बैठे और कहीं घूम आयें, कोई प्रतिबन्ध नहीं । उस वरसे की जरा हम कल्पना करें, जो थोडा सा भी बाबा के लिए कर रहे है उन्हें भी बहोत कुछ मिल जायेंगा ।

आज ही बतायाना मुरली में - परिवार के परिवार आयें दो डालियाँ टूट गयीं फिर भी आयेंगे तो सहीं सतयुग में देखो भगवान् कितना रहमदिल है । दस साल भी ज्ञान में चले कुमार कुमारी बाबा को पवित्रता का सहयोग दिया, यज्ञ में कुछ सेवा भी की फिर चलें गयें तो भगवान् के पास येह नहीं की चले गयें तो सतयुग में नो एन्ट्री, फिर भी आजो कोई बात नहीं । दस साल तो सेवा की एक हज़ार साल तो रह जाना सतयुग में । कितना बड़ा सुख देता है कितना विशाल दिल है उसका । वोह हमें श्रेष्ठ भाग्य देने आता है आज कोई ऐसा करदे तो बहार बोर्ड लगा देते है नो एन्ट्री । पर वहाँ एन्ट्री रहेगी उन सब को जिन्होंने बाबा के कार्य में थोड़ी भी मदद कर दी है । हम सब तो? कितनी मदद कर रहे है, माताएं देखो अपना घर छोड़ छोड़ के सेवाओं में आ गई । यह भी बहोत बड़ा भाग्य है बाबा इसको बहोत बड़े रूप में देखता है । सबके प्यार को स्वीकार करता है, भावनाओ का सम्मान करता है और इसके रिटर्न में बहोत बड़ा भाग्य देता है । और जिन्होंने अपना पूरा जीवन ही लगा दिया सेवाओ में उन पर तो भगवान् कुर्बान । और उनमें से भी जो श्रेष्ठ योगी और पवित्र बन गयें उनको सतयुग भी कुर्बान जो चाहे ले ले । तो ऐसा सुंदर भाग्य हमारे हाथ में आ गया है और आ जाएगा । सभी इसका पूरा पूरा फायदा उठायेंगे । ठीक है? माताएं ज्ञान सरोवर की यात्रा का पूरा पूरा फायदा उठा रहीं है? उठा रहीं है ना? पूरा फायदा उठाना । घर में तो अनेक झंझट होते है, घर तो भूल गए होंगे ना सब लोग? दिन में बाबा के रूम में बैठना कई बार अच्छे अभ्यास में रहना कोई भी गड़बड़ ना हों ।

ओम शांति.